''महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान''.. की भव्य योजना

विश्वमंगल वैदिक संस्कृति के लोकोपयोगी रहस्यों के अनुसंधान एवं वैदिक प्रचार का विद्यापीठ

॥ वेदश्री ॥ तपोवन

सिंघल फॉंडेशन (उदयपुर) की ओर से संपूर्ण भारतवर्ष में सर्वश्रेष्ठ वेदविद्यालय को प्रदत्त 'भारतात्मा अशोक सिंघल वैदिक पुरस्कार' (प्रथम वार्षिक) ई.स.२०१७ में प्रतिष्ठान के ढालेगांव स्थित विद्यालय को तथा (द्वितीय वार्षिक) पुरस्कार ई.स.२०१८ मे आलंदी विद्यालय को प्राप्त हुआ। यह इस वेद सेवा कार्य की उत्कृष्टता का प्रमाण है।

ढालेगांव वेद विद्यालय को दिया गया भारतात्मा पुरस्कार - २०१७

आलंदी वेद विद्यालय को दिया गया भारतात्मा पुरस्कार - २०१८

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

स्थापना : १९९०

संस्थापक अध्यक्ष पू. स्वामी गोविंददेव गिरि

कार्यालय पता :
धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंटस्, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे ४११०१६.
दूरभाष : +९१-२०-२५६५२५८९, २५६७२०६९
ई मेल : dharmashree123@gmail.com
वेबसाईट : www.dharmashree.org

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान (१९९१-२०१८) कार्य का सिंहावलोकन

कार्यकाल – २७ वर्ष

उद्दिष्ट – भारतीय संस्कृति के मूल ग्रंथ – पवित्र वेदों के अंग – उपांगों सहित अध्ययन – अध्यापन को प्रोत्साहन ।

वर्तमान कार्य –

- जम्मू से – मणिपुर १४ राज्यों के ३४ वेदविद्यालयों में ६५ वेदाध्यापकों द्वारा सभी वेद-शाखाओं का गुरुकुल पद्धति से ८०० छात्रों को नि:शुल्क अध्यापन।
- २६ श्रेष्ठ वैदिक विद्वानों को महर्षि वेदव्यास पुरस्कार प्रदत्त।
- ५ वृद्ध वैदिकों को ससम्मान पेंशन ।
- ९ वेद स्वाध्याय शिविर
- ७ अग्निहोत्री सेवा ।
- अध्ययन विषय – वेद-संहिता सस्वर कण्ठस्थीकरण, कर्मकाण्ड, संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, भारतीय इतिहास, संगणक (कम्प्यूटर)
- सफलता (परिणाम) – १००० से अधिक वेदज्ञ कर्मकाण्डी विद्वान जो समाज का सांस्कृतिक नेतृत्व कर रहे हैं।
- जनसामान्यों के मन में वेदों के प्रति आदर एवं क्रियाशील आस्था का निर्माण ।
- जनता-जनार्दन का तन-मन-धन से प्रधान सहयोग।
- उद्दिष्टपूर्ति हेतु कुल व्यय रु. ५० करोड से अधिक।
- धर्मपीठाधीश, धर्माचार्य, संत-महंत एवं ज्येष्ठ वैदिक विद्वानों के आशीर्वाद एवं कार्य की प्रशंसा।
- छात्र, अध्यापक एवं वेदविद्यालयों को विविध श्रेष्ठ पुरस्कार एवं सम्मान रूप से मान्यता।

''वेदश्री तपोवन'' किसलिये?...

एक समय था... जब हमारा प्रिय भारतवर्ष सुवर्णभूमि कहलाता था। यह विश्व का सबसे समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र था। ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाएँ यहाँ पूर्ण विकसित थी। यहाँ का हर व्यक्ति शिक्षित, सदाचारी एवं सुखी था। अपने आध्यात्मिक ज्ञान, आदर्श चरित्र, स्वयंपूर्ण सामर्थ्य तथा विश्वकल्याण की मंगल भावना से यह विश्व का केंद्र – विश्वगुरु कहलाता था।

वैदिक ज्ञान, वैदिक संस्कृति एवं वैदिक जीवनदृष्टि के कारण भारत राष्ट्र इस महानता के शिखर तक पहुँचा था। काल के प्रदीर्घ प्रवाह में... वैचारिक दोष, हमारी आंतरिक दुर्बलताएँ. मानव स्वभावजन्य स्वार्थ, बर्बर विदेशी एवं विधर्मी आक्रमण, अंग्रेजोंकी कुटिल नीति, मेकॉले प्रणीत दासवृत्तिप्रद शिक्षा एवं आधुनिक भौतिक भोगवादी वातावरण से इस वैदिक विद्या की घोर उपेक्षा एवं विनाश हुआ।

इस पवित्र वैदिक शिक्षा के पुनर्जागरण के एकमात्र उद्देश्य से 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' की स्थापना का रोमांचक शंखनाद हुआ, जिसके फलस्वरूप प्रतिष्ठान से संचालित एवं प्रेरित ३४ नूतन वैदिक गुरुकुल देशभर में वेदाध्ययन के पवित्र कार्य में निमग्न हैं।

इन सभी का केंद्र होगा ''वेदश्री तपोवन'' जिसमें वेद की उच्चतर शिक्षा-व्याकरण आदि वेदांग, आयुर्वेदादि उपवेद, वेदों के सही अर्थ का निर्धारण-वेदार्थ एवं वेदरहस्य यानी वेदांत की शिक्षा समाज के सभी वर्गों के बालकों को दी जाएगी तथा वैदिक संस्कृति के प्रचारकों का-वैदिकों का निर्माण होगा। स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण आदि सर्वजनोपयोगी वैदिक सिद्धांतों का प्रायोगिक अनुसंधान भी होगा जिससे देश एवं समाज को पुनः पूर्वगौरव प्राप्त होने का मार्ग प्रशस्त होगा।

अतः आइये! अवलोकन कीजिए! समझिए! एवं अर्थ सेवा-सहयोग की आहुति से अपनी संपत्ति को सार्थक कीजिए!...

आपके सहयोग की प्रतीक्षा है।

वन्दे वेदमयम् भारतविश्वगुरुम्...

वेदश्री तपोवन संकल्प-चित्र

वेदश्री तपोवन एक दृष्टिक्षेप में

* १४ एकड़ की प्राकृतिक पार्श्वभूमि, इंद्रायणी नदीतट के सान्निध्य में।
* विशाल वेदांग, वेदार्थ एवं वेदान्त विद्यापीठ।
* आधुनिक वैज्ञानिक सुविधाओं से युक्त अनुसंधान व्यवस्था।
* १२० वरिष्ठ छात्रों एवं अनुसंधान कर्ताओं हेतु छात्रावास।
* मुख्य भवन में वैदिक वस्तुसंग्रहालय, ग्रंथालय, वाचनकक्ष, संगणक कक्ष।
* यज्ञशाला।
* ध्यानमंडप।
* पुष्करिणी ।
* गौशाला।
* अध्यापक निवास।
* संगीत कक्ष।
* अतिथि निवास।
* कुलपति निवास।
* रमणीय उद्यान।
* विस्तीर्ण सभागार।
* आधुनिक सुविधायुक्त कार्यालय।
* खुला सभास्थान
* भोजनगृह।
* योग साधना केंद्र।
* भारतीय संस्कारपीठ।
* बालक, युवा एवं वयस्कों हेतु संस्कार/साधना शिबिर सुविधा।

वेदश्री तपोवन में संकल्पित कार्य....

* वेदविषयक गहन अनुसंधान
* व्याकरणादि छह वेदांगों का अध्ययन-अध्यापन ।
* विदेशी विद्वानों द्वारा विकृत किये गये वेदमंत्रों के अर्थ का निर्धारण ।
* वेद के सर्वोच्च रहस्य- वेदांत का अध्ययन ।
* मंत्रविद्या का सप्रयोग अध्ययन ।
* सामूहिक राष्ट्र कल्याणार्थ अनुष्ठान ।
* वैदिक प्रयोगोंके रूप में यज्ञ-यागादि आयोजन ।
* स्वास्थ्यरक्षण तथा व्याधिनिवारण हेतु योग - आयुर्वेद विषयक अध्ययन एवं अनुसंधान ।
* बालक-बालिकाएँ तथा जन-सामान्यों हेतु संस्कार सुविधा ।
* वैदिक विशेषज्ञों हेतु संगोष्ठि, कार्यशाला ।
* वैदिक ज्ञान के प्रचारार्थ ग्रंथ प्रकाशन
* आदर्श वैदिक जीवनप्रणालि हेतु मार्गदर्शक विविध शिविर

सभी वैधानिक एवं शासकीय अनुमतियाँ प्राप्त कर निर्माणकार्य प्रारंभ हो चुका है। प्रथम चरण का लोकार्पण एवं क्रियान्वयन दिसम्बर २०१९ में तय है।

प्रकल्प की विशेषताएँ

* पर्यावरण अनुकूल
* सौर ऊर्जा, पर्जन्य-जल, वायु ऊर्जा का अधिकतम प्रयोग ।
* जल के यथासंभव पुनः प्रयोगार्थ शुद्धीकरण व्यवस्था।
* रासायनिक खाद एवं औषधी प्रयोग से मुक्त।

भरतभूमि के अंग अंग में
वेदों के स्वर गूँजेंगे ।
यज्ञज्वाला प्रज्ज्वालित हो
धर्मध्वज लहराएंगे ।।
'वेद हमारे, हम वेदों के,'
जीवन-मंत्र बनाएंगे ।
जीवन-आहुति से भारत का
सुवर्ण-युग फिर लाएंगे ।।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान

स्थापना - १९९०
पंजीकरण क्र. ई - १४३८, पुणे

कार्यालय - धर्मश्री, मानसर अपार्टमेंटस्, सूर्यमुखी दत्तमंदिर के समीप, पुणे विद्यापीठ मार्ग, पुणे - ४११०१६. दूरभाष - ०२०-२५६५२५८९
ई-मेल - dharmashree123@gmail.com वेबसाईट - www.dharmashree.org

यह न्यास धर्मादाय आयुक्त के कार्यालय में रजिस्ट्रेशन क्रमांक E-1438 (PUNE) के अनुसार पंजीकृत है एवं प्रतिष्ठान को दिये गये अनुदान पर आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत छूट है। प्रतिष्ठान को विदेशी मुद्रा में भी दान स्वीकार करने हेतु भारत सरकार की अनुमति प्राप्त है।

कृपया आपका अनुदान 'महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान' के नाम पुणे देय चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट से कार्यालय के पते पर भिजवा दें।

महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के बैंक खाते में अनुदान भेजने हेतु आवश्यक जानकारी

आप अपनी दानराशी नगद अथवा आर.टी.जी.एस.तथा एन्.ई.एफ.टी. द्वारा महर्षि वेदव्यास प्रतिष्ठान के बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।
इस हेतु आवश्यक जानकारी कृपया प्रतिष्ठान के पुणे कार्यालय से संपर्क कर प्राप्त करें।

डॉ. श्री. प्रकाशजी सोमण - 9422060065
श्री. अनिलजी दातार (पुणे कार्यालय प्रमुख) - 8275066572

विशेष संपर्क :

श्री. रामेश्वरलालजी काबरा - 9323451000 श्री. चंद्रकांतजी केले - 9422285468
श्री. नारायणदासजी मानधणा - 9916481177 श्री. बाबूलालजी तोषनीवाल - 9372885050

आप यह कर सकते हैं ...

- स्वयं अपने परिवारजन तथा मित्रों समेत इस प्रकल्प को भेंट दें एवं उसका अवलोकन करें।
- अपने परिचित लोगों तक इसकी जानकारी पहुँचाएं...। बालकों को इस अध्ययन की प्रेरणा दें।
- आपके ज्ञान, अनुभव तथा विशेषज्ञता का लाभ इस प्रकल्प को हो इसलिये उपयुक्त सुझाव दें।
- इस महान कार्य में वानप्रस्थी के रूप में पूर्णकालीन अथवा अंशकालीन सेवा समर्पित कर जीवन सार्थक करें।
- प्रकल्प के किसी भी अंश हेतु आर्थिक सहयोग देकर पुण्यलाभ अर्जित करें।
- अपने परिचित व्यक्तियों को ऐसे ही आर्थिक सहयोग हेतु प्रेरणा दें।
- प्रकल्प में उपलब्ध विविध उपक्रमों से लाभान्वित हो कर वैदिक जीवनशैली से जीवन को धन्य करें।